रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99

REGD. NO. D. L.-33004/99

# भारत का राजपत्र
# The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 32] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 25, 2003/माघ 5, 1924
No. 32] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 25, 2003/MAGHA 5, 1924

## राष्ट्रपति सचिवालय

## अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जनवरी, 2003

**संख्या 29-प्रेज/2003—राष्ट्रपति निम्न कार्मिक को अत्यंत असाधारण वीरता के लिए अशोक चक्र प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं:—**

### सूबेदार सुरेश चंद यादव
### राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड ( मरणोपरांत )

24 सितम्बर, 2002 के दिन दो सशस्त्र आतंकवादी गुजरात में गांधीनगर स्थित अक्षरधाम स्वामी नारायण मंदिर में घुस आए और अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। इन आतंकवादियों ने 30 लोगों को मार डाला और मंदिर परिसर में उपस्थित 100 से भी अधिक व्यक्तियों को घायल कर दिया।

इस स्थिति से निपटने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड का विशेष कार्य बल विमान से भेजा गया था। सूबेदार सुरेश चंद यादव इस कार्य बल में शामिल थे। वे आतंकवादियों का ध्यान हटाने तथा आतंकवादियों पर हमला बोलने में सहायता देने हेतु अन्य कमांडो को आड़ प्रदान करने के लिए एक कमांडो टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। आतंकवादी घनी झाड़ियों तथा अंधेरे में छुपे हुए थे। जब सूबेदार यादव ने देखा कि उनके एक साथी को गोली लग गई है तो वे अपनी जान और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के बीच आगे बढ़े और अपने जख्मी साथी को वहां से निकाल लाए।

जब उन्हें लगा कि उनके टीम कमांडर अचूक गोलीबारी के बीच फंस गए हैं, तो सूबेदार यादव उन्हें गोलीबारी की आड़ देने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़े ताकि वे वहां से निकल सकें। अपने टीम कमांडर के पास पहुंचने के बाद, सूबेदार यादव अपनी ओर गोली बरसा रहे आतंकवादियों पर ग्रेनेड फेंकते हुए गोली बरसाने लगे जिससे टीम के बाकी साथी आतंकवादियों तक सुरक्षित पहुंच सकें और उन्हें निष्क्रिय किया जा सके। जब वे आतंकवादियों से पांच मीटर से भी कम की दूरी पर थे तभी उनके चेहरे पर गोलियों की सीधी बौछार आ लगी, जिससे वे बुरी तरह से घायल हो गए। अत्यधिक खून बहते रहने के बावजूद, घावों के कारण शहीद होने से पहले उन्होंने और नजदीक पहुंच कर एक आतंकवादी को मार गिराया।

सूबेदार सुरेश चंद यादव ने अदम्य साहस, लक्ष्य के प्रति सम्पूर्ण समर्पण, नेतृत्व तथा उच्चतम् कोटि की सामरिक सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया तथा देश के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

वरुण मित्रा, निदेशक

**PRESIDENT'S SECRETARIAT**

**NOTIFICATION**

New Delhi, the 25th January, 2003

No. 29-Pres./2003.—The President is pleased to approve the award of ASHOKA CHAKRA for most conspicuous bravery to :—

**SUBEDAR SURESH CHAND YADAV**

**NATIONAL SECURITY GUARD (POSTHUMOUS)**

On 24 September 2002, two armed terrorists entered the Akshardham Swamy Narayan Temple, Gandhinagar, Gujarat and started firing indiscriminately. The terrorists killed 30 people and injured over 100 persons present in the complex.

The Special Action Group of National Security Guard was flown in to deal with the situation. Subedar Suresh Chand Yadav, formed part of the Task Force and led a group of commandos to distract the terrorists and provided cover to other commandos to attack the terrorists. The terrorists were in thick shrubs and under cover of darkness. On seeing that one Comrade received a gunshot wound, Subedar Yadav without caring for his life and personal safety, moved forward under heavy terrorist's fire and evacuated him.

Realising that his Team Commander was pinned down by accurate fire, Subedar Yadav crawled forward to give covering fire to him so that he could extricate himself. After establishing contact with his Team Commander, Subedar proceeded to lob grenades and fire at the terrorists drawing fire towards himself which would enable the rest of the team to close in safely towards the terrorists in order to neutralise them. When he was less than five meters from the terrorists, he received a fire burst direct on to his face which seriously wounded him. Despite bleeding profusely, he closed in further and killed one terrorist at close quarters before succumbing to his injuries.

Subedar Suresh Chand Yadav displayed raw courage, total dedication to the mission, leadership and tactical acumen of the highest order and sacrificed his life for the nation.

BARUN MITRA, Director

Printed by the Manager, Govt. of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.